दादा भगवान परिवार का

दिसंबर २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

आक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १२ अंक: ०९
अखंड क्रमांक: १४१
दिसंबर २०२४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

खरगोश और कछुए की कहानी याद है? खरगोश और कछुए की रेस में कछुआ जीत गया था। क्या कारण था इसका? यही कि पूरी रेस के दौरान कछुआ अपने लक्ष्य को भूला नहीं था और अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे सिन्सियरली आगे बढ़ता रहा था।

हम भी कई छोटे-बड़े लक्ष्य सेट करते रहते हैं। लेकिन निश्चय करते हैं कुछ और कुछ और ही कर डालते हैं! क्या कारण है कि हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते? कमज़ोर पड़ने का क्या कारण है? क्या करने से लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है? चलो, इस अंक में ज्ञानियों द्वारा दी गई समझ प्राप्त करें और साथ ही, कहानियाँ और थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स के साथ टूर में भाग लेकर इन प्रश्नों के समाधान प्राप्त करें।

-डिम्पल मेहता

ज्ञानी कहते हैं...

मनोबल अर्थात् जैसा निश्चय किया हो वैसा ही करे। वह मजबूत मनोबल कहलाता है। उदाहरण के तौर पर : निश्चय किया हो कि आज उपवास करना है, फिर उसे खाने का विचार नहीं आता। खाने की तरफ देखता भी नहीं है।

नश्चय किया हो कि आज ऐसा नहीं करना है और फिर कुछ देर में वही करने बैठ जाता है वह कमज़ोर मन कहलाता है। उदाहरण के तौर पर : आज तो टी.वी देखना ही नहीं ऐसा निश्चय किया, फिर दो मिनिट बाद सोचता है कि क्या आ रहा होगा? चलो, चेक कर लेता हूँ, वह कमज़ोर मनोबल वाला कहलाता है। निश्चय करता है कुछ और करता कुछ और ही है।

मनोबल कैसे कमज़ोर होता है? जितना मनोरंजन में डूबता जाता है उतना कमज़ोर होता जाता है। टी.वी. और मूवी देखने के सुख में डूब जाता है इसलिए कमज़ोर होता जाता है। नियम लेने के बाद उसे तोड़ देता है, नियमित उसका पालन नहीं करता है, तो शक्ति कम होती जाती है।

निश्चय करने के बाद सिन्सियर रहता है तो मनोबल बढ़ता जाता है। शक्ति बढ़ती जाती है। किसी को दुःख नहीं देना है, ऐसी भावना करने से मनोबल बढ़ता जाता है। नव कलमें, प्रार्थनाएँ, विधियाँ मनोबल को बढ़ाती हैं।

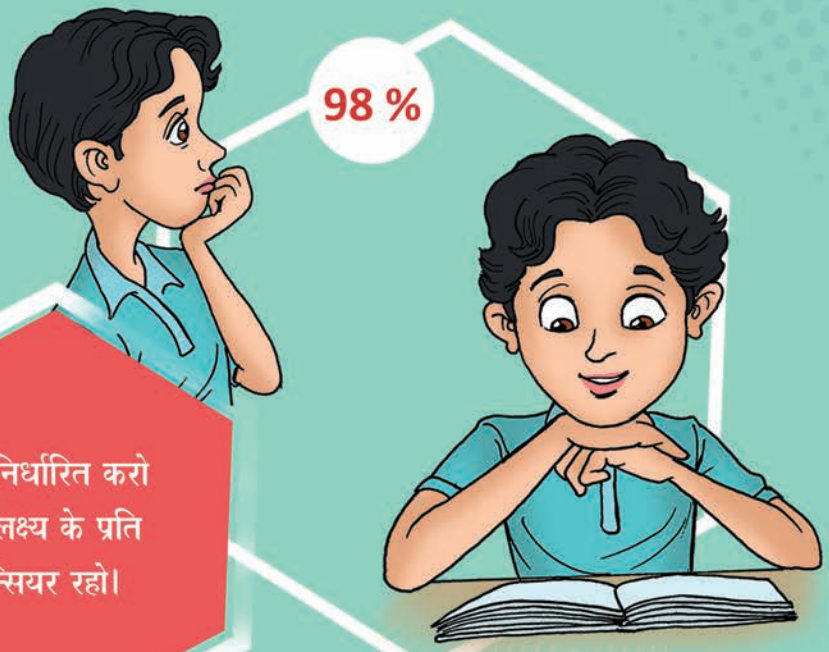

लक्ष्य निर्धारित करो और लक्ष्य के प्रति सिन्सियर रहो।

यह तो

जो लक्ष्य निर्धारित किया हो उस लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए शक्तियाँ माँगो।

छोटे-छोटे लक्ष्यों को सिन्सियरली पूरा करो।

उदाहरण के तौर पर : आज मैं एक घंटा पढ़ाई करूँगा ऐसा तय करने के बाद अगर मोबाइल देखने की इच्छा हो तो एक घंटा पढ़ाई करने के बाद ही मोबाइल को हाथ लगाना चाहिए।

नई ही बात है!

दूसरों के नेगेटिव देखने से मन की शक्तियाँ टूट जाती हैं। दूसरों के दोष देखे हो, तो हृदयपूर्वक पछतावा करने से मन की शक्ति बढ़ती जाती है।

चलो खेलें...

दो चित्रों में दस अंतर खोजो।

ऐन्युअल डे ड्रामा

सुबोध ने सोफे पर स्कूल बैग फेंका और फ्रिज में से आइस्क्रीम निकाल कर टी.वी के सामने बैठ गया।

'सबकी रक्षा करना मेरा काम, पावर मैन है मेरा नाम।' कार्टून के पात्र के साथ सुबोध भी डाइलॉग बोल रहा था।

'सुबोध, यह क्या?' मम्मी ने पूछा। 'फिर इस टाइम पर आइस्क्रीम खा रहे हो? यह खाना खाने का टाइम है। और पावर मैन की ऐक्टिंग करके क्या तुम भी ऐक्टर बनना चाहते हो?'

'हाँ, इसमें गलत क्या है? मुझे ऐक्टिंग करना बहुत अच्छा लगता है' उसने कहा। और इतना कहकर कुछ देर के लिए अपने सपनों की दुनिया में खो गया। उसने देखा कि वह स्टेज पर खड़ा है और ऑडियन्स में बैठे हुए लोग उसकी ऐक्टिंग से इतने प्रभावित हो गए हैं कि खड़े होकर तालियाँ बजा रहे हैं।

'ओय, मिस्टर शेखचिल्ली, पहले खाना खाकर अपना होमवर्क कर लो। नहीं तो टीचर फिर से शिकायत करेंगी।' मम्मी ने कहा।

अगले दिन स्कूल में सुबोध घबराया हुआ था। उसने गणित का होमवर्क नहीं किया था। वह तक्ष की बुक से कॉपी करने ही जा रहा था कि तभी क्लास में मैथ्यू टीचर आए।

'आज आपके गणित के टीचर ऐबसन्ट हैं। मैं एक विशेष घोषणा करने आई हूँ। दो महीने बाद होने वाले ऐन्युअल फंक्शन में एक नाटक करने वाले हैं। जो नाटक में भाग लेना चाहते हैं वे मेरे पास आएँ। मैं आपकी ऐक्टिंग का एक छोटा सा टेस्ट लूँगी। जो बच्चे नाटक में भाग लेना नहीं चाहते वे अपना होमवर्क कर सकते हैं।'

मैथ्यू टीचर ने क्लास में से सुबोध और तक्ष को चुना। सुबोध को मुख्य कैरक्टर का रोल मिला और तक्ष को साइड कैरक्टर का।

घर पहुँचकर टी.वी. चलाने के बजाय वह दौड़कर मम्मी के पास गया, 'मम्मा!! स्कूल में ऐन्युअल फंक्शन है। और उसमें एक नाटक होने वाला है। और उस नाटक में मुझे मुख्य कैरक्टर का रोल मिला है!' सुबोध ने एक ही साँस में सब कह डाला।

'अरे वाह बेटा! वेरी गुड! बड़े-बड़े डाइलॉग याद कर लोगे न?' मम्मी ने सुबोध के सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा।

'हाँ मम्मा! मुझे ऐक्टिंग बहुत पसंद है। डाइलॉग तो मैं आराम से याद कर लूँगा!!' सुबोध ने आत्मविश्वास से कहा।

'लेकिन अभी कुछ देर मैं फ्रेश होना चाहता हूँ। स्कूल में टेस्ट देकर थक गया हूँ। कुछ देर पावर मैन देखकर फिर खाना खाऊँगा।', ऐसा कहकर वह टी.वी ऑन करके बैठ गया।

दूसरे दिन मैथ्यू टीचर ने सभी चुने हुए विद्यार्थियों को स्कूल के बाद नाटक की प्रैक्टिस के लिए एक जगह बुलाया।

'आज हम डाइलॉग पढ़कर प्रैक्टिस करेंगे। लेकिन एक सप्ताह बाद सभी को अपने डाइलॉग याद करके आना है।' मैथ्यू टीचर ने कहा और फिर प्रैक्टिस सीन समझाया।

ओके, तो आज हम 'बोट सीन' की प्रैक्टिस करेंगे। इस सीन के बारे में थोड़ा बता दूँ। बोट में बैठकर तक्ष को नदी के दूसरे किनारे जाना है। तक्ष की नजर नदी के दूसरे किनारे पर है और वह चप्पू चला रहा है। उसी समय सुबोध वहाँ से गुजरेगा। तक्ष को देखकर उसे बहुत आश्चर्य होगा। फिर सुबोध की लाइन आएगी।

'मित्र, यह क्या मूर्खता कर रहे हो?'

तक्ष कहेगा, 'मुझे शाम होने से पहले नदी के दूसरे किनारे पहुँचना है। वहीं पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ मैं। इसमें क्या मूर्खता है?'

तब सुबोध उससे कहेगा, 'मित्र, पहले अपनी बोट को तो खूँटे से खोलो! खोले बिना चाहे जितना भी चप्पू चलाओगे, फिर भी अपने लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाओगे!'

सीन समझाकर मैथ्यू टीचर ने पूछा, 'समझ में आया?'

सुबोध और तक्ष ने 'हाँ' कहा और बहुत अच्छी ऐक्टिंग की। और एक-दो सीन की प्रैक्टिस करके सब जुदा हुए।

उस शाम सुबोध ने डाइलॉग याद करने का निश्चय किया। लेकिन घर पहुँचते ही उसने सोचा कि 'कुछ देर टी.वी देख लेता हूँ। आज पावर मैन की शक्तियों के पीछे का रहस्य खुलने वाला है। उसके बाद डाइलॉग याद कर लूँगा।'

और थोड़ी देर बाद सुबोध के फ्रेन्ड्स उसे खेलने के लिए बुलाने आए और वह खेलने चला गया। इसी तरह पंद्रह दिन बीत गए।

एक दिन प्रैक्टिस के बाद मैथ्यू टीचर ने सुबोध को चेतावनी दी, 'सुबोध, सिन्सियर होकर डाइलॉग याद कर लो। तुम्हारे अलावा सभी ने डाइलॉग याद कर लिए हैं। तुम्हारी मम्मी ने मुझे कहा था कि तुम टी.वी देखने में बहुत टाइम बिगाड़ते हो। अब अगर तुमने डाइलॉग याद नहीं किए तो...'

टीचर का वाक्य पूरा होने से पहले ही सुबोध बोल उठा, 'नहीं-नहीं, मैम। कल मैं ज़रूर डाइलॉग याद करके आऊँगा।'

उस शाम सुबोध स्क्रिप्ट लेकर डाइलॉग याद करने बैठा। तभी डोरबेल बजी। सुबोध दरवाजा खोलने दौड़ा और पापा के हाथ में अपनी फेवरिट आइस्क्रीम का बॉक्स देखकर वह उनसे लिपट गया।

'बेटा, ऐन्युअल फंक्शन हो जाने के बाद आइस्क्रीम खाना।' मम्मी ने सुबोध से कहा।

'लेकिन मम्मा... मैं बस थोड़ी सी चखूँगा। आप हमेशा मुझे आइस्क्रीम खाने से मना करती हो। लेकिन आज तो पापा लेकर आए हैं। आज तो मुझे खाने दो!'

यों चखते-चखते सुबोध आधा पैकेट आइस्क्रीम खा गया। और रात को जैसे-तैसे थोड़े डाइलॉग याद करके सो गया। अगले दिन सुबह उठने लगा तो उससे बिल्कुल हिला नहीं जा रहा था। उसका शरीर बुखार से तप रहा था और गले में इन्फेक्शन हो गया था।

तीन दिनों तक वह स्कूल नहीं जा सका। चौथे दिन स्कूल में कदम रखते हुए उसे डर लग रहा था। वह तक्ष से कुछ पूछता उससे पहले ही मैथ्यू टीचर ने सबको प्रैक्टिस के लिए बुला लिया।

प्रैक्टिस रूम में मैथ्यू टीचर ने बहुत प्यार से सुबोध को अपने पास बुलाया, 'सुबोध, तुम आ गए? तबियत अच्छी है न?'

सुबोध ने सिर्फ सिर हिलाकर 'हाँ' में जवाब दिया। उसे अंदर बहुत अच्छा लगा कि मैथ्यू टीचर ने उस पर बिल्कुल गुस्सा नहीं किया।

तभी उन्होंने कहा, 'सुबोध, आज तुम साइड में बैठकर प्रैक्टिस देखो। अब तुम्हारा रोल तक्ष करेगा। फाइनल प्रैक्टिस करने का टाइम आ गया था और तुम

गैरहाज़िर थे। और वैसे भी, तक्ष को तुम्हारे सारे डाइलॉग याद थे।'

यह सुनकर सुबोध को गहरा धक्का लगा। स्टेज पर मुख्य कैरक्टर का रोल करने का उसका सपना था। लेकिन वह सपना पूरा करने के लिए उसने कहाँ कोई मेहनत की थी?!

उसका चेहरा उतर गया। प्रैक्टिस के बाद मैथ्यू टीचर सुबोध से मिले।

'बेटा, उस दिन मुझे तुम्हारी ऐक्टिंग बहुत पसंद आई थी।' टीचर के इतना कहते ही सुबोध की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

मैथ्यू टीचर ने सुबोध को शांत करते हुए पूछा, "तुम्हें ड्रामा का 'बोट सीन' याद है?"

'यस मैम।' सुबोध ने धीमी आवाज में कहा।

"इस सीन में तक्ष के कैरक्टर ने नदी के दूसरे किनार पहुँचने का निश्चय किया था। लेकिन वह पहुँच नहीं पाया था। क्योंकि उसने अपनी बोट को खूँटे से खोला ही नहीं था। तुमने भी अपनी बोट को 'टी.वी.' के खूँटे से बाँध दिया और इसलिए तुम भी आगे नहीं बढ़ सके। नाटक में तुम्हारे बीस ही डाइलॉग थे। बीस के बीस डाइलॉग एक साथ याद नहीं करने थे। यदि रोज सिर्फ तीन डाइलॉग भी सिन्सियरली याद किए होते तो भी एक सप्ताह में सारे याद हो जाते। एक लक्ष्य सेट करके उस लक्ष्य के प्रति सिन्सियर रहें तो ज़रूर उसे पा सकते हैं। लेकिन अपनी बोट को किसी खूँटे से बाँधकर रखें तो आगे कैसे बढ़ सकते हैं? तुम्हें समझ में आ रहा है?" टीचर ने प्यार से पूछा।

'यस मैम।' सुबोध ने फिर से धीमी आवाज में कहा।

'अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है।' टीचर ने कहा। 'क्या तुम तक्ष के साइड कैरक्टर की लाइन २-३ दिनों में याद कर लोगे?'

सुबोध ने 'हाँ' कहा। और इस बार उसने जो कहा वह सचमुच करके दिखाया।

ड्रामा के बाद मैथ्यू टीचर ने सुबोध से कहा, 'शाबाश बेटा! बहुत अच्छा अभिनय किया। अगले साल मेन कैरक्टर का रोल करोगे न? बड़े-बड़े डाइलॉग याद रहेंगे न?'

सुबोध ने कहा, 'वह तो याद रहेंगे ही। लेकिन विशेष तौर पर यह याद रहेगा कि प्रगति करने के लिए मुझे मेरी बोट को खूँटे से खोलना चाहिए।'

और दोनों हँस पड़े।

चिली के छोटे भाई पार्सली ने चिली का मज़ाक उड़ाता हुआ एक सॉन्ग बनाया था। अनजाने में आलू ने उस पर डान्स किया। इससे चिली को बुरा लगा है। आलू और चिली प्रैक्टिस करने के लिए तालाब पर जा रहे हैं। अब आगे...

मैं आलू को बताने ही वाला था कि मुझे क्या हुआ है लेकिन किसी कारणवश आलू मेरे सामने बत्तीसी निकाल कर हँस रहा था। उसका चेहरा देखकर मैं भूल गया कि मैं क्या कहने वाला था। मुझे शक है कि पार्सली की सिंगिंग सुनकर आलू के दिमाग के तार हिल गए हैं और वह इतनी बड़ी स्माइल पास कर रहा है।

उसकी स्माइल देखकर घबराकर मैंने उससे पूछा, 'तूम इतना क्यों हँस रहे हो?' तो मुझसे कहता है, 'मेरे पास तुम्हारे लिए एक सरप्राइज़ है।'

मुझे डिब्बा और बोटल देते हुए आलू बोला, 'इस डिब्बे में तुम्हारे लिए ड्राइफ्रूट्स हैं। क्योंकि प्रैक्टिस

करोगे तो तुम्हें भूख लगेगी और तुम कुछ भी खा लोगे तो तुम्हारी आवाज़ बैठ जाएगी। और इसमें तुम्हारे लिए फ्रूट जूस है, जिससे तुम्हारा गला ठीक रहेगा।'

आलू ने मेरे लिए इतनी मेहनत की? मुझे भीतर बहुत ठंडक महसूस हुई। मुझे डिब्बे के अंदर की चीज़ों से ज्यादा उस पर लगे स्टिकर पसंद आए। बेस्ट सिंगर - चिली। इसे देखते ही कोको के आँखों की पुतलियाँ बाहर आ जाएँगी। मेरा रोब छा जाएगा और कोको को भी पता चल जाएगा कि मेरे सपोर्ट में स्केटिंग चैम्पियन 'आलू' है।

आलू ने पार्सली के सॉन्ग पर डान्स किया, मैंने उसके लिए उसे माफ कर दिया। वैसे भी, आप भी आलू का डान्स देखोगे तो उसे माफ कर दोगे। यदि कभी पार्सली के सिंगिंग और आलू के डान्स के बीच मुकाबला हो तो जज तय ही नहीं कर पाएँगे कि कौन अधिक बुरा कर रहा है! और उससे भी बुरी बात तो यह है कि

दोनों को पता ही नहीं है कि उनके सिंगिग और डान्सिग से सामने वाले की आँखों और कानों को कितनी तकलीफ होती है।

यह सोचते हुए हम प्रैक्टिस से लिए नदी किनारे पहुँचे। तो वहाँ पर कोको कोयल थी। मैंने कोको के सामने देखा ही नहीं। धीरे से अपनी बॉटल रखी जिससे उसे दिखाई दे कि बेस्ट सिंगर कौन है! लेकिन यह क्या? उसके हाथ में भी 'सिंगर कोको' लिखी हुई बोटल थी!!

आलू को देखते ही वह खुश होकर बोली, 'थैंक्स आलू!' और आलू ने जैसी स्माइल मुझे पास की थी वैसी ही बड़ी स्माइल पास करते हुए बोला, 'यू आर वेलकम, बेस्ट ऑफ़ लक...'

आलू कोको के लिए भी जूस लाया? वह कोको का फ्रेन्ड है या मेरा? उसे कोको को जूस देने की क्या ज़रूरत थी? मुझे इतना गर्म लग रहा है कि मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरे पंख जल रहे हैं। आलू को दूसरों की मदद करने का इतना ही शौक है तो उसे एक जूस की दुकान ही खोल लेनी चाहिए। मुझे आलू पर इतना गुस्सा आ रहा है न!

मैंने उससे पूछ ही लिया, 'आलू, तुम मेरी साइड हो या कोको की? उसके लिए जूस क्यों लाए!

आलू को ऐसे शॉक लगा मानो मैंने कुछ गलत कहा हो। वह बोला, तुम्हारा ही! तुम्हारी बॉटल पर बेस्ट सिंगर लिखा है, देखो!

यदि वह मेरी साइड है तो उसने कोको को ज्यूस क्यों दिया?

कोको की बोटल पर तो बेस्ट भी नहीं लिखा हुआ था, यह चिली को इतना गरम क्यों लग रहा है? रीडर्स, चिली के साथ यह क्या हो रहा है? आपको क्या लगता है, आलू कोको के लिए जूस क्यों लाया? आपके जवाब हमें भेजना न भूलें।

फूड प्लेन

रोमी दादू, मुझे भी चिम्प की तरह पाइलट बनना है।
उस काम में बहुत जोखिम है। वह तुम्हारा काम नहीं है।
अरे, लेकिन क्यों नहीं? अगर मैं भी फूड प्लेन चलाना सीख जाता हूँ तो हमारे टापू के लिए कितना उपयोगी हो पाऊँगा।
चिम्प की तरह प्लेन से अलग-अलग जंगलों में जाकर विभिन्न प्रकार के फल ला सकता हूँ, बुजुर्गों के लिए जड़ी-बुटियाँ ला सकता हूँ। प्लीज़ दादू, मुझे सीखने दो न!
ज़िद मत करो। अपनी साइज़ के अनुसार तुम अपना काम करो और चिम्प को उसका काम करने दो।
कुछ महीनों बाद,
अरे चिम्प, तुम बहुत दिनों से दिखे नहीं। सब कुछ ठीक चल रहा है न?
हाँ दादू, एकदम फर्स्ट क्लास! आँखों में इन्फेक्शन हो गया था इसलिए बाहर नहीं निकलता था।
तो फूड प्लेन कौन चला रहा है? फ्रूट्स तो टाइम से आ जाते हैं।
हमारा चैम्पियन, मिस्टर मिंकी! वह अच्छी तरह ट्रेन हो गया है।

मिंकी? मिंकी को तुमने सिखाया? लेकिन क्यों? ट्रेन करने के लिए तुम्हें अपनी साइज़ का कोई और नहीं मिला?

दादू, मैं आपको कुछ महीने पहले की एक घटना बताता हूँ। लिज़ी आन्टी ने मुझे एक टापू से थोड़ी जड़ी-बुटियाँ लाने के लिए कहा।

सन्डे का दिन था इसलिए टापू के अन्य प्राणी भी मेरे साथ फूड प्लेन में आए। मिंकी भी था।

जड़ी-बुटी लेने के लिए लंबी लाइन देखकर,

इतनी लंबी लाइन में कौन खड़ा होगा?

क्या हम फिर कभी आएँ?

मैं नहीं खड़ा रहूँगा।

अरे, ऐसा कैसे चलेगा? हम जिस काम के लिए आएँ हैं वह तो करना ही चाहिए न। मैं लेकर आता हूँ।

और अंत में वह लेकर आया। उस दिन मैं समझ गया कि भले ही मिंकी का शरीर छोटा है, लेकिन उसका मन मजबूत है।

यह तुमने अच्छा नहीं किया। तुम पछताओगे।

एक दिन,
सुना आपने? मिंकी सुबह से फूड प्लेन लेकर गया है लेकिन अभी तक वापस नहीं लौटा।
ज़रूर मिंकी का ऐक्सिडन्ट हो गया होगा!
तभी दूर आकाश में मिंकी का फूड प्लेन आता हुआ दिखाई दिया। सभी ने राहत की साँस ली। मिंकी ने फूड प्लेन पार्क किया।
मैंने तुमसे कहा था न।
आज तो हद हो गई। कहीं फल ही नहीं मिल रहे थे। रात हो गई थी। रास्ते में सिमी हिरण ने मुझे एक दिशा में जाने के लिए कहा।

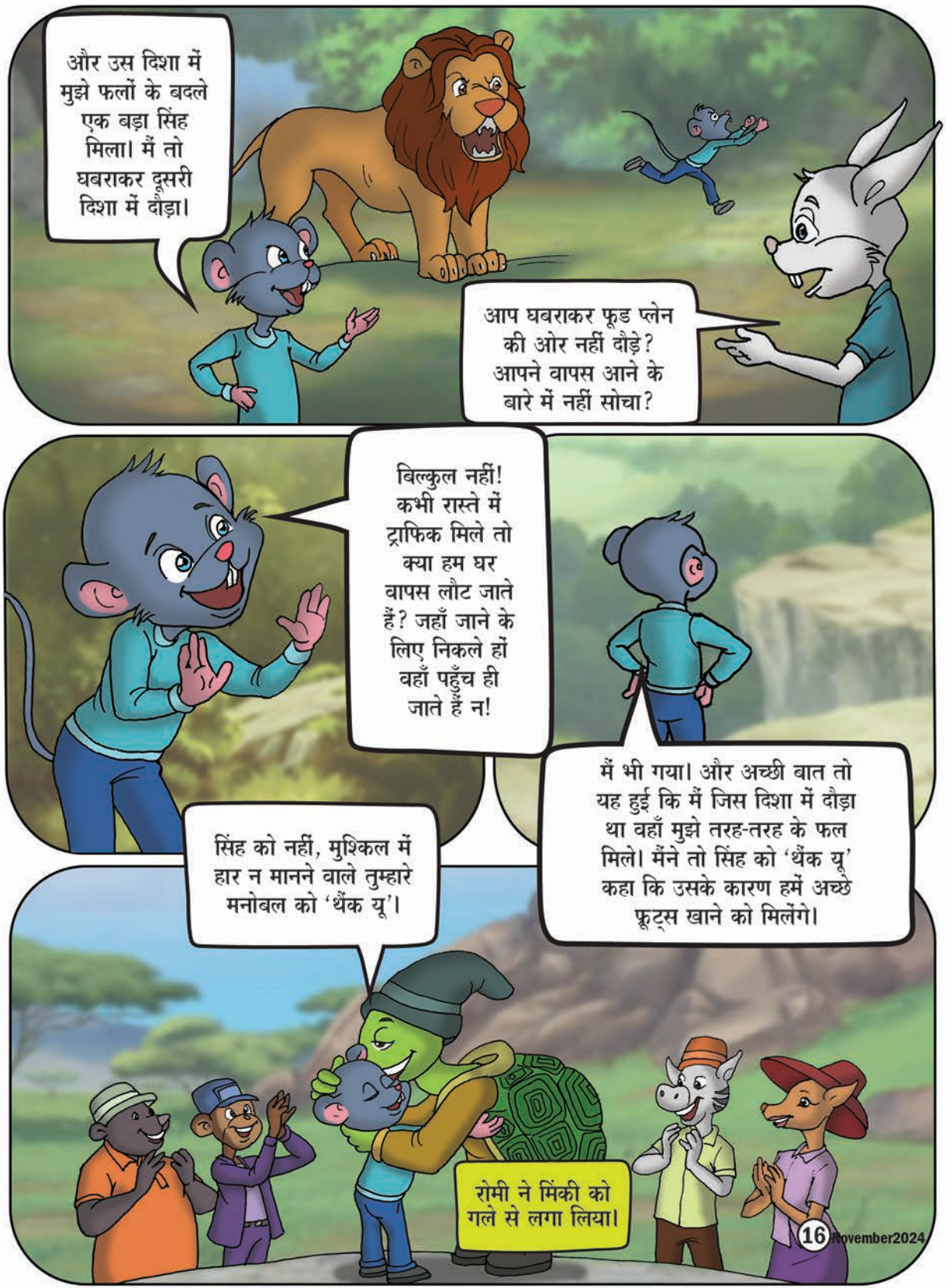
और उस दिशा में मुझे फलों के बदले एक बड़ा सिंह मिला। मैं तो घबराकर दूसरी दिशा में दौड़ा।
आप घबराकर फूड प्लेन की ओर नहीं दौड़े? आपने वापस आने के बारे में नहीं सोचा?
बिल्कुल नहीं! कभी रास्ते में ट्राफिक मिले तो क्या हम घर वापस लौट जाते हैं? जहाँ जाने के लिए निकले हों वहाँ पहुँच ही जाते हैं न!
मैं भी गया। और अच्छी बात तो यह हुई कि मैं जिस दिशा में दौड़ा था वहाँ मुझे तरह-तरह के फल मिले। मैंने तो सिंह को 'थैंक यू' कहा कि उसके कारण हमें अच्छे फ्रूट्स खाने को मिलेंगे।
सिंह को नहीं, मुश्किल में हार न मानने वाले तुम्हारे मनोबल को 'थैंक यू'।
रोमी ने मिंकी को गले से लगा लिया।

कहाँ घूमने जाना है यह तय करने में सबका दम निकल गया। 'ऐसा लगता है कि इस साल दिसंबर हमें डीडीमा जंगल में ही बिताना पड़ेगा।' ज़ोई बोली। 'हम लोग कुछ तय ही नहीं कर पा रहे हैं।'

तभी रिज़ो हाथ में टिकिट लेकर आया। जगह फाइनल हो गई है और तुम सब के लिए सरप्राइज़ है। ५ दिसंबर की दोपहर तीन बजे की ट्रेन है। तैयार हो जाना।

स्टेशन पहुँच कर थीओ को धक्का लगा, 'इतनी माथापच्ची करने के बाद अंत में रिज़ो हमें मुबंई ले जा रहा है! इतना घटिया मजाक!' जिफ्फी तो रोने लगा।

'अरे, पहले देख तो लो कि मुंबई में कहाँ जाना है!' रिज़ो ने थीओ और जिफ्फी को शांत किया।

मुबंई में चौपाटी बीच के पास स्थित चैत्य भूमि में पैर रखते ही सभी को कुछ अलग ही तरह की शांति का अनुभव हुआ।

'यह कौन सी जगह है?' ज़ोई ने पूछा।

'यह बाबा साहेब अंबेडकर का समाधि स्थल है। ६ दिसंबर को उनकी पुण्यतिथि है। और इसलिए हम इस समय यहाँ आए हैं।' रिज़ो ने कहा।

सभी बाबा साहेब अंबेडकर की स्टोरी सुनना चाहते थे। रिज़ो ने कहानी सुनाना शुरू किया।

डॉक्टर बाबा साहेब अंबेडकर भारत के पहले कानून मंत्री थे। उन्हें भारत के संविधान (**Constitution**) के निर्माता के रूप में जाना जाता है।

थीओ : एक मिनिट, एक मिनिट। संविधान यानी?

रिज़ो : यह समझाना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन तुम आगे की कहानी सुनो।

बचपन में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। लोग उनके परिवार को अछूत मानते थे। अछूत, इसलिए कोई गलती से भी उन्हें नहीं छूता था। स्कूल के बच्चे जहाँ से पानी पीते थे वहाँ से अंबेडकर को पानी पीने की मनाई थी। उन्हें एक कोने में बैठकर पढ़ाई करनी पड़ती थी। कोई उनसे बात नहीं करता था। इतने तिरस्कार के बीच पढ़ाई करना बहुत कठिन था।

इतना सुनकर ही जिफ्फी की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। ज़ोई ने उसे टिश्यू दिया और रिज़ो ने छतरी खोलकर बात आगे बढ़ाई।

और वैसे भी अंबेडकर को पढ़ाई में अधिक रूचि नहीं थी। एक दिन अंबेडकर ने घर से भागकर मुबंई जाने का प्लान बनाया। उन्होंने तय कर लिया कि वे मुबंई जाकर नौकरी करेंगे। लेकिन उनके पास मुबंई जाने के लिए पैसे नहीं थे। लगातार तीन दिनों तक उन्होंने अपनी बुआ के पर्स में से पैसे चोरी करने का प्रयास किया। लेकिन सफल नहीं हुए। अंत में चौथे दिन जब वे सफल हुए तो उन्हें सिर्फ आधा आना ही मिला। वे बहुत निराश हो गए। बहुत सोचने के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पढ़ाई किए बिना किसी भी प्रॉब्लम का अंत नहीं आ सकता।

और बस, उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी लाइफ में बहुत सारे प्रॉब्लम्स आए लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। वे एक रूम के मकान में रहकर पढ़ाई करते थे। मकान के पास ही चक्की होने के कारण सुबह पाँच बजे से ही वहाँ आवाजें आना शुरू हो जाती। शांति से एकाग्रतापूर्वक पढ़ाई करने के लिए वे रात को २ बजे उठकर पढ़ते।

भारत में पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने अमेरिका की कोलंबिया युनिवर्सिटी से एम. ए और पीएच.डी. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। लंदन युनिवर्सिटी से एम.ए. और पीएच.डी. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। जर्मनी जाकर भी उन्होंने पढ़ाई की। कई बार पैसों की तकलीफ होने पर वे ब्रेड के टुकड़े और पानी पीकर काम चला लेते। लेकिन उन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी।

चलो खेलें...

कलर के अनुसार चित्र बनाओ।

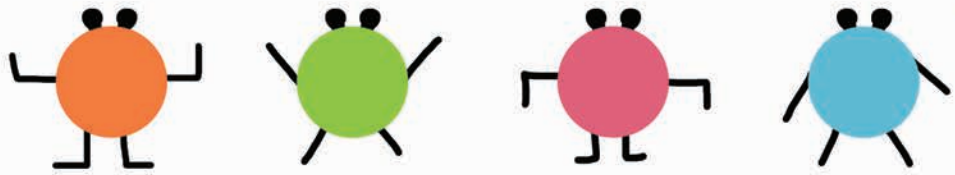

Akram Express

December 2024
Year : 12, Issue : 09
Conti. Issue No.: 141

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

बड़ौदा में आयोजित किए गए दादा भगवान के ११७वें जन्मजयंती महोत्सव के चिल्ड्रन पार्क की एक झलक

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशिप नं. के बाद प्र हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशिप नं. के बाद प्रप्र हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.